
【想影～指きりの坂道～】

こもれび

タテ書き小説ネット Byヒナプロジェクト

<http://pdfnovels.net/>

注意事項

このPDFファイルは「小説家になろう」で掲載中の小説を「タテ書き小説ネット」のシステムが自動的にPDF化させたものです。この小説の著作権は小説の作者にあります。そのため、作者または「小説家になろう」および「タテ書き小説ネット」を運営するヒナプロジェクトに無断でこのPDFファイル及び小説を、引用の範囲を超える形で転載、改変、再配布、販売することを一切禁止致します。小説の紹介や個人用途での印刷および保存はご自由にどうぞ。

【小説タイトル】

【想影く指きりの坂道く】

【Nコード】

N9084D

【作者名】

こもれび

【あらすじ】

ひと夏の喪失と出逢いの物語陽射しの当たらない部屋で切ない夏を感じてみませんか？

プロローグ『約束』（前書き）

かなりの長編です。読んでくださったかたは、出来れば最後までお付き合いください。感想心待ちにしております。

プロローグ『約束』

結ばれた指

交わされた『約束』

それは遠い昔の想い出……

プロローグ『約束』

《いつか想う約束》

十

『ぜったい、ぜっただよ!』

『あゝもうつ! わかったよ!』

あまりのしつこさに、根負けして首を縦に振る……フリをしていただけで、心の中ではすごく嬉しかったんだ。

『ホント? ぜったいのぜったい!? 私のこと忘れないよね? ぜったい迎えにきてね……私、待ってるから。ずっと、ずっと……ヒツク』

『なっ、泣くなよう……』

『じゃあっ……ゆびきり、しょ? 破ったらはりせんぼんなんかじゃ許してあげないんだから!』

いつもは気の小さいこいつが、こんなに必死だったのは初めてだっ

た。

ホントは喜んでくれるならそれくらいいくらでもしてあげたかった。

だけど恥ずかしくて、素直にはなれなくて……。

『ゆっ、ゆびきりいっ？そんなの出来るかよっ、ガキじゃあるまいし！』

言いながら、横目でチラツと覗いてみる。

すると、案の定両の目を涙でいっぱいにして……でも泣いてはいなかった。

最後は笑顔で

こいつなりの意地のようだ。

『うっっ……ヒック』

必死に堪えている……。

はあ……俺は本っ当にこいつの泣き顔に弱いなあと思いつつ……

『ホラっ！』

『えっ………』

そっぽを向いたまま、左手をつきだしてやる。

『するんだろ？ゆびきり………』

じゅっと突き出された左手をみつめて、次の瞬間には……

『っ！っ！』

泣き顔が笑顔に変わった

ゆゝびきりげんまん

うそついたら

はりせんぼんのゝますっ

(ゆびきった！)

ここから、すべてが始まったんだ……。

そして……懐かしいハズの島に帰ってきた夏、物語は再び加速し始める。

静かに、
ただと確実に……。

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150	151	152	153	154	155	156	157	158	159	160	161	162	163	164	165	166	167	168	169	170	171	172	173	174	175	176	177	178	179	180	181	182	183	184	185	186	187	188	189	190	191	192	193	194	195	196	197	198	199	200	201	202	203	204	205	206	207	208	209	210	211	212	213	214	215	216	217	218	219	220	221	222	223	224	225	226	227	228	229	230	231	232	233	234	235	236	237	238	239	240	241	242	243	244	245	246	247	248	249	250	251	252	253	254	255	256	257	258	259	260	261	262	263	264	265	266	267	268	269	270	271	272	273	274	275	276	277	278	279	280	281	282	283	284	285	286	287	288	289	290	291	292	293	294	295	296	297	298	299	300	301	302	303	304	305	306	307	308	309	310	311	312	313	314	315	316	317	318	319	320	321	322	323	324	325	326	327	328	329	330	331	332	333	334	335	336	337	338	339	340	341	342	343	344	345	346	347	348	349	350	351	352	353	354	355	356	357	358	359	360	361	362	363	364	365	366	367	368	369	370	371	372	373	374	375	376	377	378	379	380	381	382	383	384	385	386	387	388	389	390	391	392	393	394	395	396	397	398	399	400	401	402	403	404	405	406	407	408	409	410	411	412	413	414	415	416	417	418	419	420	421	422	423	424	425	426	427	428	429	430	431	432	433	434	435	436	437	438	439	440	441	442	443	444	445	446	447	448	449	450	451	452	453	454	455	456	457	458	459	460	461	462	463	464	465	466	467	468	469	470	471	472	473	474	475	476	477	478	479	480	481	482	483	484	485	486	487	488	489	490	491	492	493	494	495	496	497	498	499	500	501	502	503	504	505	506	507	508	509	510	511	512	513	514	515	516	517	518	519	520	521	522	523	52
--	---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	----

- - - - -

雪君島

7年前に俺達家族が離れた島だ。

いや、正確には離れざるを得なかったというべきか……。

雪君島^{ゆきぎみじま}という所は、は名前に反して雪なんか一切降らない年中夏のような島で、島と言うよりは一つの大きな山が大半を占めている……らしい。

らしい、と言うのは今の俺には島に居たころの記憶がすっかり抜けてしまっているからだ……。

当時島は活火山であったが、噴火の恐れなど毛ほどもなかった。

……が、俺達家族が親父仕事の関係で島から離れる前日に

雪君島は、噴火した

まさに寝耳に水。

何の対策も非難ルート^{ルート}の確保もされていなかったうえに、噴火自体も記録に残るほどの規模で、被害は凄まじいものとなった。

俺達一家は島を離れる準備をいたため、難を逃れることが出来た。

俺と、親父だけ……

母さんと妹の夏奈は……俺と父さんの目の前で流れ来る溶岩の中に飲まれていった。

記憶を失くした今も、肝心のこの瞬間だけは消しきれていない。薄ぼんやりと、今だにあの時の景色が夢に出てきたりする。

離島を終えたあとの俺は、それはひどいものだった……。

10歳の子共にとって、肉親が目の前で……しかも二人も死ぬと言うことはとても耐えられるものではなかった。

記憶を誤魔化さないと、生きていけない程に。

国からの支援を受けながら、ほとんど廃人のような俺を親父は男手

一つで育ててくれた。

だけど 愛する妻、娘を失ったのは親父も一緒。

そんな、肉体的にも精神的にも限界だった時、父を支えてくれたのが雪路さんだった。

その後二人は結婚して今に至る。

当時は恥ずかしくて『母さん』なんて呼べなかったけど、今ではお袋呼ばわりである。

そして、それまで光りを失っていた俺を、ここまで元気にしてくれたのは再婚と同時に出来た二つ下の妹、桐子だった……。

N E X T T h e 1 s t M e m o r y

PDF小説ネット発足にあたって

PDF小説ネット（現、タテ書き小説ネット）は2007年、ルビ対応の縦書き小説をインターネット上で配布するという目的の基、小説家になろうの子サイトとして誕生しました。ケータイ小説が流行し、最近では横書きの書籍も誕生しており、既存書籍の電子出版など一部を除きインターネット関連に横書きという考えが定着しようとしています。そんな中、誰もが簡単にPDF形式の小説を作成、公開できるようにしたのがこのPDF小説ネットです。インターネット発の縦書き小説を思う存分、堪能^{たんのう}してください。

この小説の詳細については以下のURLをご覧ください。
<http://ncode.syosetu.com/n9084d/>

【想影～指きりの坂道～】

2010年10月13日17時31分発行